ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-2* Issue-7* August- 2017
Innovation The Research Concept

मुरादाबाद जनपद की पृष्ठ भूमि

मिथलेश सिंह
असिस्टेन्ट प्रोफेसर,
हिन्दी विभाग,
के0 जी0 के0 महाविद्यालय,
मुरादाबाद

सारांश

मुरादाबाद जनपद का साहित्य में उल्लेखनीय योगदान रहा है खड़ी बोली और अवधी भाषा के मध्य होने के कारण तथा बोल चाल में ब्रजभाषा का साधारण सा पुट होने के कारण यहाँ की भाषा कुछ विशिष्ट हो गई है। यद्यपि यहाँ के साहित्यकार भाषा में ही काव्य रचना करते हैं, क्षत्रिये बोली को उन्होंने काव्य रचना का माध्यम नहीं बनाया है, तथापि अपने योगदान के लिये वे सदैव स्मरणीय रहेंगे। स्वातंत्रयोतर काल में भी यहाँ साहित्यकारों को साहित्य सृजन की गति कभी मंद नहीं पड़ी है। स्व0 प0 ज्वाला प्रसाद मिश्र, स्व0 पं0 ज्वाला दत्त शर्मा, स्व0 मुंशी इन्द्रमणि, स्व0 अम्बा प्रसाद, पं0 दुर्गा दत्त त्रिपाठी, स्व0 विश्वम्भर मानव, स्व0 पं0 मदनमोहन व्यास, स्व0 कैलाश चन्द्र अग्रवाल आदि ने जो साहित्य रचना का जो वातावरण बनाया था वह आज तक सुरक्षित है।

मुख्य शब्द :ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, उद्योग, आन्दोलन

प्रस्तावना

जनपद ग्राम और प्रान्त के बीच की कड़ी है। जहाँ एक ओर उसका सीधा सम्बन्ध दूरस्थ क्षेत्रों में अति पिछड़े ग्रामीण अंचलों से रहता है वहीं वह प्रान्तीय राजधानी से भी निरन्तर सम्पर्क में व्यस्त रहता है। जन सामान्य की परेशानियों, समस्याओं और माँगों से शासन को अवगत कराता है इस रूप में जनपद का विशेष महत्त्व हैं। राज्ये सरकारें भी इस तथ्य से सुपरिचित है और उनके द्वारा जनपदों के गजेटियर प्रकाशित कराये गये। उनके अध्ययन से सम्बन्धित जनपद के विषय में बहुत कुछ प्रामाणित सामग्री सहज सुलभ हो जाती है। फिर भी शोध एवं अनुसंधान से सम्बन्धित कार्यों के लिये पर्याप्त स्थान बना रहता है। कारण है कि एक तो शासकीय–शोध की अपनी सीमाएँ है, और दूसरा प्रत्येक क्षेत्र से सामग्री देने की विवशता के कारण किसी भी क्षेत्र का पूर्ण अध्ययन कर पाना इसके लिये कठिन होता है। अतः स्वतन्त्र रूप से शोधार्थियों के कार्य के लिए पर्याप्त गुंजाइश दिखाई पड़ती है। मुरादाबाद जनपद का गजेटियर भी इस तथ्य का अपवाद है। उसमें आवश्यक उल्लेख आँकड़े आदि तथ्य उसकी सीमाओं में अंकित है किन्तु विवेचन विश्लेषण, निष्कर्ष–निश्चय आदि का उसमें अभाव है इसी अभाव की पूर्ति के लिये मुरादाबाद जनपद को भौगोलिक, ऐतिहासिक व सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का समझना अति आवश्यक है।

भारत के लिए विदेशी मुद्रा जुटाने वाला एवं पीतल नगरी के नाम से विश्व के मानचित्र पर आरेखित यह प्रसिद्ध नगर मुरादाबाद परशुराम गंगा, जिसे बोल चाल में राम गंगा कहा जाता है के दाहिने किनारे बसा है जनसंख्या की दृष्टि से मुरादाबाद जनपद मण्डल का सबसे बड़ा जनपद है यह जनपद 28 डिग्री 20 मिनट एवं 29 डिग्री 16 मिनट उत्तरी अक्षाशों तथा 70 डिग्री 4 मिनट एवं 79 डिग्री 6 मिनट पूर्वी देशावरों के मध्य लगभग आयातकार रूप में स्थित है इसके उत्तर में उधम सिंह नगर (उतरांचल) एवं जनपद बिजनौर दक्षिण में जनपद बदायूँ तथा पूर्व में जनपद रामपुर स्थित है जनपद का कुल क्षेत्र फल 3806.7 वर्ग कि0मी0 है[1]। जनपद की समुद्र तल से ऊँचाई 204 मी0 है एवं भूमि का उत्तर से दक्षिण की और ढलान है। इसी कारण जनपद के उत्तर में स्थित ठाकुरद्वारा तहसील समुद्रतल से 234 मी0 एवं दक्षिण में बिलारी तहसील मात्र 177 मी0 ऊँचाई पर स्थित हैं। जनपद की प्रमुख नदियों में रामगंगा आती है इसके अतिरिक्त ढेला गांगन तथा अन्य नदियाँ तथा बरसाती नाले भी यहाँ हैं।[2] उत्तर पूर्व में हिमालय पर्वत तथा समस्त पश्चिमी सीमा पर गंगा नदी से आवृत्त मुरादाबाद जिले की स्थिति उत्तर प्रदेश में विशेष महत्वपूर्ण है।[3] यहाँ की मिट्टी सामान्यतः चिकनी, दोमट, बालुई एवं रेतीली पायी जाती है। हिमालय की तराई क्षेत्र के निकट होने के कारण जनपद सामान्यतः जलवायु ग्रीष्म ऋतु में अधिक ठण्ड़ी और शुष्क रहती है। जनपद की भूमिगत जल स्तर पश्चिमी तथा उत्तरी क्षेत्र में पानी पृथ्वी तल से सामान्यतः 18 से 30 मी0 गहराई पर मिलता है।

तराई वाले क्षेत्र में पानी की सतह ऊपर तथा अन्य क्षेत्र काफी नीचे है। सी0डी0सी0 सर्वेक्षण के आधार पर जनपद के आठ विकास खण्डों को ड्राई घोषित किया जा चुका हैं जनपद की मुख्य नदियां राम गंगा कोसी एवं ढेला है। राम गंगा नदी मुरादाबाद, अमरोहा एवं ठाकुरद्वारा के बीच से होकर बहती है। रामगंगा में बाढ़ की स्थिति पैदा होने से तहसील मुरादाबाद एवं ठाकुरद्वारा के कई ग्राम प्रभावित होते हैं। कोसी तथा ढेला नदी से भी तहसील ठाकुरद्वारा व मुरादाबाद के काफी ग्राम प्रभावित होते हैं। जनपद में 5,96,700 वर्ग मी0 भौगोलिक क्षेत्रफल में से 4,87,243 हेक्टयर क्षेत्र में खेती की जाती है। सामान्यतः 3,10,086 हेक्टयर में खरीफ 3,97,070 हेक्टयर में रवी एवं 25,441 हेक्टयर में जायद की खेती की जाती है। जनपद में 3,92,00 हेक्टेयर में शुद्ध सिंचित क्षेत्रफल है सिंचाई नहरों राजकीय नलकूपों एवं व्यक्तिगत नलकूपों से होती है।

ज्वार, बाजरा, मूंग, उर्द, अरहर और रबी में गेहूँ, जौं, चना एवं मटर पैदा होता है। कैश क्राप में गन्ना, आलू एवं मैन्था की फसल ली जाती है।

ऐसा माना जाता है कि महान सम्राट भरत की छठी पीढ़ी में जन्में अजमीढ़ के द्वितीय पुत्र नील द्वारा स्थापित पांचाल के उत्तरी भाग में स्थित यह नगर पुराण काल में माध्यादिक अथवा मध्य देश के नाम से जाना जाता है महाभारत में वर्णित सत्यवान सावित्री कभी इस क्षेत्र के शासक रहे हैं।[6]

विश्व विख्यात पीतल नगरी मुरादाबाद मध्यकाल में चौपाला नाम से जानी जाती थी इस चौपाला के अन्तर्गत दीनदार पुरा, भदौरा,मानपुर–नारायणपुर एवं देहरी नामक चार गांव थे इसमें कटघर का अधिकांश भाग सम्मलित था मुरादाबाद नाम से इसकी स्थापना सन् 1632 ई0 में हुई थी।[7] यहाँ के राजा ने दिल्ली के बादशाह से शिकायत की तब बादशाह ने सम्भल के सुबेदार रूस्तमखां दक्खिनी को आदेश भेजा कि वह राजा रामसुख को दबाए। रूस्तम खाँ दक्खिनी ने बुहत शक्ति के साथ आक्रमण किया। जिसमें राजा रामसुख मारा गया। रामसुख के अंत के बाद उसने चौपाला पर अधिकार कर लिया तथा यहां एक किला निर्मित कराया एवं मस्जिद बनवाई। उस स्थान का नाम रूस्तमाबाद रख दिया। जब शाही दरबार के नाम रखे जाने की जानकरी हुई तब उसको बुलाकर जबाब तलब किया गया। उसने तत्काल शाहजहाँ के बेटे राजकुमार मुराद के नाम पर इस स्थान का नाम मुरादाबाद रखे जाने की सूचना दी। तब से मुरादाबाद नाम प्रचलित हो गया।[8]

प्राचीन सभ्यता के समय में मुरादाबाद की रामगंगा का नदी के दक्षिण–पश्चिम का क्षेत्र दीख क्षेत्र कहलाता था वाल्मीकि रामायण में रामगंगा नदी को उत्तर गंगा कहा गया था। इतिहासकार बी0एच0 वडेर ने रामायण कालीन स्थान परिचय में इस स्थान को अपर ताल माना है। प्रो0 नन्द लाल डे ने भी मुरादाबाद को अपरताल के अन्तर्गत प्रलम्ब प्रांत से जुड़ा हुआ माना है।[9]

प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम के समय आई जाग्रति से 19वी सदी के सातवें दशक में यहाँ समाचार पत्रों का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ। 1881 तक इसकी संख्या 10 हो चुकी थी। मुरादाबाद में प्रकाशन का वर्णन करते समय सिन्ध से लेकर उत्तर भारत पर्यन्त प्रकाशन की सेवा करने वाले लक्ष्मीनारायण प्रेस का योगदान भुलाया नहीं जा सकता। तब से अब तक पत्रकारिता के क्षेत्र में निरन्तर प्रगति हुई है। उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध में हिन्दी की अविस्मरणीय सेवा करने वाले साहित्य महारथी 'मिश्र बन्धु' एवं ला0 सालिग्राम वैश्य, इस मिट्टी की सन्तान थे। दीर्घकाल तक यह सर सैयद अहमद खाँ का भी कार्यक्षेत्र रहा है। यहाँ के पं0 ज्वाला दत्त शर्मा की रचनाएँ बीसवीं सदी की प्रारम्भिक कालीन पत्रिकाओं–माधुरी व सरस्वती में छपती थीं।

बीसवीं शताब्दी के आरम्भ में पं0 राम स्वरूप शर्मा सामवेद, यजुर्वेद व अमर कोष का हिन्दी में अनुवाद किया। मुरादाबाद के निवासी डॉ0 ब्रजमोहन मेहरोत्रा हम्बोल्ट स्टेट कॉलिज कैलीफोर्निया, अमेरिका के विजिटिंग प्रोफेसर थे। ग्रेनाइट की खोज करने वाले डॉ0 अनन्त गोपाल झिगंरन इसी नगर की विभूतियों में गिने जाते हैं। वर्तमान समय में गजल को काव्य विधा का रूप देने वाले प्रसिद्ध साहित्यकार दुष्यन्त को शिक्षा–दीक्षा का श्रेय भी इसी नगर को है। हृदय रोग के लिये अचूक औषधि निर्माण में पचास वर्ष तक संलग्न वैद्य हरिप्रसाद शर्मा इसी नगर के निवासी हैं।[10]

भारतीय स्वतन्त्रता आंदोलन के परिप्रेक्ष्य में मुरादाबाद की अविस्मरणीय घटनाएँ।[11]

1. मुरादाबाद नगर के एक स्थान 'गलशहीद' के नाम से जाना जाता है। 1947 के स्वतन्त्रता संघर्ष में यहाँ पर खड़े पेड़ों पर अनेक स्वतन्त्रता सेनानियों को लटका दिया गया था। आज भी कुछ पुराने पेड़ उन शहीदों के बलिदान की मौन साक्षी है।
2. प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम के असफल होने के पश्चात् आजादी के दीवाने देश के हर कोने में अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ विद्रोह की मशाल जलाये हुए थे। मुरादाबाद नगर को गर्व है यहाँ के एक नागरिक सूफी अम्बा प्रसाद जी पर। उनका सम्पूर्ण जीवन स्वतन्त्रता संग्राम में ही बीत गया। वह प्रसिद्ध लेखक भी थे। 1897 में अंग्रेजों ने उन्हें डेढ़ वर्ष की सजा करके जेल में डाल दिया। उनके विरूद्ध यही आरोप लगा था कि वे अंग्रेजों के विरूद्ध विद्रोह की आग फैलाने में लगे हैं। वहाँ अंग्रेंजी फौज ने उन्हें गिरफ्तार कर गोली मार देने की सजा सुनाई। जब अंग्रेंजी सिपाही उन्हें गोली मारने गये तब तकवह सच्चा वीर स्वतन्त्रता सेनानी जेल में अपने प्राण त्याग चुका था। जिस पर मुरादाबाद सदैव गर्व करता रहेगा।
3. 1920 में असहयोग आन्दोलन में उत्तर प्रदेशीय कांग्रेस का विशेष सम्मेलन हुआ इस सम्मेलन में महात्मा गांधी डॉ0 ऐनी बेसैन्ट, मौलाना मुहम्मद अली तथा मौलाना शौकत अली आदि अनेक कांग्रेसी नेताओं का विशाल जुलूस मण्डी चौक से निकला नेता वग्घियों में बैठे थे और उन वग्घियों को जोशोले युवक खींचरहे थे। ऐसा था उस समय आजादी का जोश।

4. इस सम्मेलन को Non co-operation Movement भी कहा जाता हैं इसी प्रस्ताव के आधार पर अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी ने महात्मा गांधी के नेतृत्व में असहयोग आन्दोलन प्रराम्भ करने की घोषण की।
5. मुरादाबाद के तमाम सत्याग्रहियों को गिरफ्तार कर जेल में डाला गया। सन् 1930, 1932, 1940, 1942 में मुरादाबाद के लाखों सत्यग्रहियों को शहीद होने के परिमाण मिलते हैं। 11 अगस्त 1942 को मण्डी चौक जुलूस पर गोली चलाई गई। जिसमें हजारों लोग शहीद हो गये। सन् 1935 में गऊ हत्या वन्द पारित हुआ नगर पालिका में।

सांस्कृतिक पृष्ठभूमि

अपने पीतल उद्योग तथा कलात्मक उत्पादनों के लिये वैश्विक स्तर पर अपनी स्वतन्त्र पहचान स्थापित करने वाला मुरादाबाद सांस्कृतिक जगत में भी अनेक उपलब्धियों की विरासत संजोये हुये है।

मुरादाबाद जनपद का सांस्कृतिक परिदृश्य

1. धातु पात्रों पर वर्ण– संयोजन।
2. मुरादाबाद में रंगाई का प्रारम्भ।
3. पैंटिंग के पात्रों की भारत तथा विदेशों में बड़ी मांग है मुरादाबाद में तैयार 90 प्रतिशत काम विदेश चला जाता है। भारत में कला से अंकित पात्र केवल मण्डी चौक मुरादाबाद में ही उपलब्ध हैं। भारत को विदेशी मुद्रा उपलब्ध कराने में लगे सभी कलाकार निश्चित ही हम सबके स्नेह और प्रोत्साहन के अधिकारी है।

मुरादाबाद जनपद के प्रकाशन संस्थान

मुरादाबाद को पीतल नगरी नाम की संज्ञा दी जाती है यह सत्य है। किन्तु इसके साथ इस नगर के शब्द कृतियों के सजृन कर्ता हिन्दी साहित्य के इतिहास माला में मोतियों की तरह गुँथे हैं। पं0 ज्वाला प्रसाद मिश्र, पं0 ज्वाला दत्त शर्मा, मुंशी इन्द्र मणि, सूफी अम्बा प्रसाद, पं0 दुर्गा दत्त त्रिपाठी, विश्वम्भर मानव, डॉ0 जगदीश गुप्ता, पं0 छदम्मी लाल शर्मा, पं0 जगदीश प्रसाद, एम0ए0 मदन मोहन व्यास, श्री कैलाश चन्द्र अग्रवाल, श्री मनोहर लाल वर्मा, डॉ0 महेश 'दिवाकर' श्री राम लाला अनजाना, श्री योगन्द्र पाल सिंह विश्नोई, श्री पुष्पेन्द्र वर्णवाल, श्री महेश्वर तिवारी श्री रामानन्द शर्मा प्रसिद्ध साहित्यकारों का योगदान इस नगरी से जुड़ा है।

पूर्वकालिक संस्थान

प्रकाशन के क्षेत्र में अनेकानेक बुद्धिजीवियों ने अपना योगदान दिया। तथा प्रसिद्ध साहित्यकारों के साहित्य का प्रकाशन कर अपना एक स्थान बनाया।

'लिटरेचर सोसाइटी' ने सन् 1990 ई0 में 'श्री बल्देव प्रसाद मिश्र' जी की 'नन्द विद्या' प्रकाशित की और 'हिमालय डिपो प्रकाशन' ने 'मयंक बाला' (उपन्यास) प्रकाशित कर अपना स्थान बनाया वहीं 'दरभंगा मन्दिर मुरादाबाद 'नामक संस्थान ने सन् 1911 में 'वर्ण धर्म व्यवस्था' नामक पुस्तक छापी। संनातन धर्म प्रेस ने 1912 ई0 में 'भक्ति और उपासना' को प्रकाशित कर प्रकाशन क्षेत्र में कदम रखा। भगवत प्रकाशन कार्यालय में सम्वंत 1958 वि0 में 'श्रीमद्भागवत' का प्रकाशन किया 1962 में 'उपाध्याय ब्रदर्स एण्ड कम्पनी ने' वाल्मीकि रामायाण टीका'' प्रकाशित की। वहीं ग्रंथ सोसाइटी ने सम्वत् 1967 में कालिदास मेघदूत पूर्वाध में (अनुवाद) पुस्तक का प्रकाशन किया और ग्रन्थकार हाईस्कूल, मुरादबाद में 1888 ई0 में 'सत्यासत्य निर्णय' पुस्तक पाठकों को सौंपी।

इसी प्रकार लक्ष्मी नारायण प्रेस, प्रदीप प्रेस, दुर्गा पब्लिकेशन्स चन्द्रा प्रकाशन एवं सरस्वती प्रकाशन आदि का इतना बड़ा योगदान रहा है कि इस नगर की भूमि पवित्र हो गई है।

मुरादाबाद जनपद की पत्र पत्रिकाएँ

यहाँ से न केवल साहित्यक, धार्मिक, आयुर्वेदिक, जातीय, बाल पत्र–पत्रिकाओं का सम्पादन व प्रकाशन हुआ है, अपितु यहाँ उनमें अनेक व्यक्तियों ने देश की प्रमुख पत्र–पत्रिकाओं का सम्पादन व प्रकाशन किया है। आर्य समाज मुरादाबाद के तत्वाधान में वैशाख प्रतिपदा सम्वत 1942 वि0 तदनुसार दिनांक 1 मई 1885 को जनपद मुरादाबाद के प्रथम हिन्दी पत्र 'आर्य विनय' नामक पाक्षिक का आरम्भ किया इस पत्र का वार्षिक मूल्य 2 रूपये था। पत्र का सम्पादन प्रराम्भ में पं0 रूद्रदत्त शर्मा ने किया। मुद्रण कार्य वैदिक यंत्रालय प्रयाग में होता था। वर्ष 1897 में पण्डित कृपाराम द्वारा प्रवर्तित उर्दू साप्ताहिक ''वैदिक धर्म हिन्दी में निकालना प्रराम्भ किया। वर्ष 1896 में एक उर्दू साप्ताहिक पत्र 'मुहर्रिम' का प्रकाशन किया गया। 1 वर्ष पश्चात् इसी मुहर्रिम ने आर्य मित्र नाम धारण कर लिया। हिन्दी साप्ताहिक के रूप में प्रकाशित के होने लगा। मुरादाबाद के 'आर्य भास्कर प्रेस' से इस पत्र का प्रकाशन होता था लगभग 6 वर्ष तक आर्य–मित्र का प्रकाशन मुरादाबाद से हुआ।

मुरादाबाद से तंत्र–शास्त्र एवं ज्योतिष संबंधी एक पत्र 'तन्त्र प्रभाकर का भी उल्लेख मिलता है। चिकित्सा शास्त्र सम्बन्धी एक हिन्दी मासिक पत्र 'वैद्य' का सम्पादन व प्रकाशन भी मुरादाबाद में हुआ। 7 अक्टूबर 1912 से यह पत्र वैद्य शंकर लाल जैन के सम्पादन में वर्षों तक प्रकाशित होता रहा है। वैद्य जी की ख्याति देश भर में फैली थी। 1914 ई0 में हिन्दी साप्ताहिक 'शंकर' का प्रकाशन भी आरम्भ हुआ यहाँ से 'भारतोदय' समाचार पत्र निकलने का भी उल्लेख मिलता है यहाँ से 'सनातन धर्म पताका' मासिक पत्र का सम्पादन श्री राम स्वरूप शर्मा द्वारा किया गया। प्रख्यात कथाकार 'सरस्वती' मासिक के लेखक पण्डित ज्वाला दत्त शर्मा के सम्पादन में यहाँ एक साहित्यिक पत्रिका 'प्रतिभा' मासिक का प्रारम्भ 1917 ई0 में हुआ। अर्थभाव के कारण 1921 में बन्द हो गई। यहाँ से एक जातीय पत्रिका 'बरनवाल चन्द्रिका' के प्रकाशन की भी जानकारी मिलती है। 'अबला हित कारक' मासिक पत्रिका भी यहाँ से श्रोत्रीय शंकर लाल बिजनोरी के सम्पादन में प्रकाशित होता था इस पत्र का पहला अंक संवत् 1959 तदनुसार 1 मई 1902 को प्रकाशित होता था श्री जगदीश एम0ए0 तथा श्री लक्ष्मण त्रिपाठी के सम्पादन में एक साहित्यिक मासिक 'प्रदीप' को प्रकाशन भी अगस्त 1939 से आरम्भ हुआ पत्र में कहानी कविता, साहित्यिक लेख एवं अन्तर्राष्ट्रीय विषयों पर भी भरपूर सामग्री प्रकाशित होती थी।

इसके अतिरिक्त भी यहाँ से अनेक उल्लेखनीय पत्र–पत्रिकाएं सम्पादित व प्रकाशित हुई। जिनका

स्थानाभाव के कारण मात्र नामोंल्लेख कर देना समीचीन होगा। देश बालक मासिक (स0 देवकी नंदन मिश्र) बाल विनोद साथी योजना पारिक्षक, बाल बन्धु मासिक (सं0 सरला देवी दीक्षित) देश वाणी साप्ताहिक (पं0 देवकी नदन मिश्र) मुरादाबाद वन्धु साप्ताहिक मनभावन साप्ताहिक आदि नाम उल्लेखनीय हैं।

वर्तमान में भी मुरादाबाद नगर से अनेक पत्र–पत्रिकाओं का सम्पादन व प्रकाशन होरहा है जिसमें दैनिक अमर–उजाला, दैनिक जागरण, सांध्या दैनिक युगबन्धु संध्या दैनिक सत्य छाया, दैनिक बल्ली टाइम्स, दैनिक हिमालय संयुक्त आवास साप्ताहिक मुरादाबाद रंग, अरूण मासिक तथा जनप्रिय ज्योति त्रैमासिक प्रमुख पत्र–पत्रिकाएँ हैं।

मुरादाबाद नगर के प्रमुख धर्म स्थल

भारतीय कला एवं संस्कृति की धनी यह पीतल नगरी मुरादाबाद बर्तनों के निर्माण एवं निर्यात के प्रसिद्ध है इसका हस्तशिल्प सम्पूर्ण विश्व का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट करता आया हैं। यहाँ के दिव्य सिद्ध मन्दिर, मस्जिद, गुरूद्वारे, गिरिजा घर, स्वयं अपने अतीत की अभिव्यक्ति कर रहे हैं। नगर अत्यन्त विस्तृत है तथा इसमें धर्मस्थल अगणित हैं। कलेवर विस्तार की स्थिति न आवे इसलिए केवल प्रमुख स्थालों का परिचय ही यहाँ प्रस्तुत है। लोक में **बाबा मिश्री गिरि** जी के टीले के नाम से प्रसिद्ध यह पीठ माता काली का मन्दिर है। वह रामगंगा के पावन तट पर श्मशान भूमि के समीप है। यह दशनामी नागा सन्यासी श्री पंचजूना आखाड़ा से सम्बन्धित श्री मिश्रा गिरी जी का साधना क्षेत्र है।

बाबा कामेश्वर नाथ (किसरौल) चौरासी घंटा नाम से प्रसिद्ध यहाँ भगवान शिव का मन्दिर अत्यन्त प्राचीन है।

अस्थल मन्दिर (किसरौल)

यह भी अत्यन्त प्राचीन मन्दिर है कहा जाता है कि यहाँ अर्चना करने से सिद्धि प्राप्त होती है। प्राचीन काल का मूर्ति शिल्प देव विग्रहों के रूप में यहाँ द्रष्टव्य है।

गंगा मन्दिर (किसरौल)

राम जानकी मन्दिर (कानून गोयन) लगभग चार शताब्दी से अधिक समय से यहाँ राम–जानकी जी की सेवा की जा रही है। झारखण्डी महादेव मन्दिर (नागफनी) होलिका मन्दिर (कपूर कंपनी) हनुमान मन्दिर अन्नपूर्णा मन्दिर हाथी वाला मन्दिर बैजनाथ मन्दिर (मण्डी चौक) 'मधुरम' राधा कृष्ण मन्दिर आदि अन्य मन्दिर बुद्ध बाजार में दुर्गामन्दिर, कोठीवाल नगर में गीता ज्ञान मन्दिर दोनों मन्दिर समाज सेवा के केन्द्र भी हैं। चौराहा गली अमरोहा गेट, लोहागढ़ व रेती स्ट्रीट क्षेत्र में अनेक प्राचीन मन्दिर जैसे– अड़ियल महादेव मन्दिर चिमटे वाले बावा का मन्दिर, प्रसादी लाल मन्दिर चौराहा गली का, रस्तौगी मन्दिर दीनदार पुरा का राधा कृष्ण मन्दिर चूड़ी वाली गली का शिव मन्दिर कटरा नाज स्थिल शिवालय, गुजराती मौ0 का सीता राम मन्दिर रेती मौ0 का प्राचीन शिवालय एवं कजरी सराय का माता मन्दिर, हरथला कॉलोनी का शिवालय रेलवे कालोनी का मनोकामना मन्दिर। नगर के मध्य मेथोडिस्ट चर्च, दांग मुहल्ला में व बड़ा गिरिजाघर पीली कोठी चौक पर है इस्लाम धर्म सम्बन्धी केन्द्रों में नगर के मुख्य मार्ग पर स्थित शाही मस्जिद व सत्रहवी सदी की शिल्प–शैली का ज्ञान कराने वाली जामा मस्जिद प्रमुख मानी जाती है। अभिनय के धरातलपर मुरादाबाद ने अनेक संस्थाऐं उपजी। ये इस प्रकार है। आदर्श कला संगम, कार्तिकय मंजरी नाटय मंच प्रयास आस्था समता आदि जैसी संस्थाओं ने संगीत तथा नाटक आदि अभिनय क्षेत्र में प्रोत्साहित करने के लिए कार्य किया है।

मुरादाबाद के अभिनय क्षेत्र के प्रायः सभी कलाकार रेडियो व टी0वी0 के कलाकार है।

अभिनय सम्राट मास्टर फिदा हुसैन 'नरसी' जिसने मुरादबाद की ख्याति में चार चाँद लगाये।

औद्योगिक कला

संरक्षण एवं विकास सैकड़ों वर्ष तक मुगल सौन्दर्य यहाँ की जीवन शैली को प्रभावित करता रहा मुगलकाल से मुरादबाद में कलात्मक उद्योगों जैसे स्वर्णकारी, बढईगीरी, छपाई, रंगाई व बर्तन कला का व्यवसाय होता रहा है।औद्योगिक कलाओं के विकास की दृष्टि से यहाँ की हस्तकलाओं का क्रमवार निम्न लिखित है।

स्वर्णकारी, लकड़ी का काम, वस्त्र रंगाई व छपाई, ब्रुश निर्माण, लाख का काम, कसीदाकारी, धातु उद्योग, स्याह कलम तथा नक्काशी, उचलाई का काम, मूर्तियां व प्लान्टर्स, खिलौने, संरक्षण। अच्छे शिल्पियों को भारत सरकार द्वारा उनके कार्य के अनुसार मान–पत्र भी दिये जाते हैं।

साहित्यिक पृष्ठ भूमि

अपने पीतल उद्योग तथा उसके कलात्मक उत्पादनों के लिए वैश्विक स्तर पर अपनी पहचान स्थापित करने वाला मुरादाबाद नगर सांस्कृतिक तथा सृजनात्मक जगत में अनेक उपलब्धियों की विरासत सजोये हुए है यह सच है कि उस की सांस्कृतिक तथा साहित्यिक सम्पन्नता अतीत जैसी विविध वर्णों अनेक आयामों तथा आकर्षक प्रतीत नहीं होती इसलिये शरीर की पुष्टता और दीप्ति के बावजूद उसकी आत्मा किसी हद तक विपन्न अथवा भूखी है। आज मुरादाबाद को विपन्नता को भरने के लिये हिन्दी जगत के स्व0 ज्वाला प्रसाद, स्व0 बलदेव प्रसाद मिश्र, स्व0 लाला सालिग्राम वैश्य और स्व0 ज्वाला दत्त शर्मा संगीत जगत में भी स्व0 बुलाकी दास, स्व0 पुरूषोत्तम व्यास और जगदीश कपूर जैसे साधनाशील तपस्वी भी नहीं रहे।

लेकिन इन अभावों के बावजूद कुछ देर के लिये अलग हट कर मुरादाबाद का रचनात्मक विकास यात्रा के विकास की पड़ताल की जाए तो हिन्दी साहित्य के विकास पथ पर कुछ गहरे तथा स्पष्ट पद चिन्ह दिखलायी पड़ते हैं।

अतीत में मुरादाबाद संस्कृत तथा हिन्दी ग्रन्थों के प्रकाशन का एक प्रमुख केन्द्र रहा है। हिन्दी की प्रगतिशील धारा के यशस्वी कवि डॉ0 शिवमंगल सिंह 'सुमन' का पहला काव्य संग्रह 'जीवन के गान' हिन्दी नवगीत के उन्नायक तथा यशस्वी प्रवक्ता स्व0 डॉ0 शम्भूनाथ सिंह का कहानी संग्रह 'रात रानी' प्रगति शील

कविता चर्चित कवि सुरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव का प्रथम काव्य संग्रह 'मजदूर' आदि का प्रकाशन मुरादाबाद से हुआ था इतना ही नहीं आर्य समाज के आधार स्तम्भ 'सत्यार्थ प्रकाशन' की रचना भूहमि होने का श्रेय मुरादाबाद को ही प्राप्त है। स्वामी दयानन्द को अपने इस उल्लेखनीय कार्य में यही के एक विद्धान रचनाकार स्व0 भवानी दत्त जोशी से पर्याप्त सहयोग प्राप्त हुआ। कवि, लेखक कथाकार, नाटककार, अनुवादक तथा भाव्यकार आदि कई रूपों में यहाँ की प्रतिभाओं ने हिन्दी को अपना विनम्र योगदान दिया। मुरादाबाद के सृजनात्मक जगत की हलचल भारतेन्दु काल से ही धीमी सुनाई पड़ने लगती है स्वामी शंकरानन्द के विज्ञान–नाटक से अगर यहाँ की तत्कालीन प्रतिभाओं की प्रयी की बात उठे तो निश्चित रूप से लाला सालिग्राम वैश्य, पं0 ज्वाला प्रसाद तथा पं0 बलदेव प्रसाद मिश्र के रूप में उसका स्मरण किया जा सकता है।

सालिग्राम बहुभाषाविद् थे तथा हिन्दी, उर्दू, उड़िया के अतिरिक्त संस्कृत तथा फारसी भाषा के भी अच्छे जानकार थे। माधवानन्द, काम–कन्दला, मोरध्वज, अभिमन्यु वध, पुरू विक्रम, लावण्यमयी, अर्जुन मर्दन तथा पुरूरवा आदि इनकी चर्चित नाट्य कृतियाँ हैं। सुदामा चरित नाम से इनका एक काव्य ग्रन्थ सम्वत् 1950 में वेंक्टेश्वर प्रेस बम्बई से प्रकाशित हुआ। पं0 ज्वाला प्रसाद मिश्र को हिन्दी तथा अंग्रेजी समुचित ज्ञान प्राप्त था इन्होंने स्वामी दयानन्द के 'सत्यार्थ प्रकाश' की स्थापनाओं का खण्डन करते हुए 'दयानन्द तिमिर भाष्कर' नामक ग्रन्थ का लेखन किया जिसकी स्थापनाओं की प्रशंसा सनातन धर्मावलम्बियों ने मुक्त कण्ठ से की। तथा भारत धर्म मण्डल ने इन्हें विद्यावारिधि की मानद उपाधि देकर सम्मानित किया। पंडित ज्वाला प्रसाद मिश्र का सबसे महत्वपूर्ण अवदान तथा भाष्यकार के रूप में ही रहा। इन्होंने कई संस्कृत ग्रन्थों का पद्यात्मक तथा गद्यात्मक अनुवाद कर, गद्य तथा पद्य दोनों रूपों में अपनी रचनात्मक मेधा का परिचय दिया इसमें कालिदास का 'अभिज्ञान शाकुन्तलम' का शाकुन्तल नाटक नाम से अनुवाद महत्वपूर्ण है। इनके नाटक लेखन की मौलिक प्रतिभा का प्रमाण 'सीता वनवास' नामक कृति से मिलता है। साथ राग रागनियों में निबद्ध गीतों से प्राप्त होता है।

इसी त्रसी के तीसरे व्यक्तित्व पं0 ज्वाला प्रसाद मिश्र के अनुज पं0 बलदेव प्रसाद मिश्र का जन्म पौष शुक्ला एकादशी 1926 को मुरादाबाद में हुआ पं0 वलदेव प्रसाद मिश्र इस त्रसी की सर्वाधिक महत्वपूर्ण तेजस्वी कड़ी थे। राजनीति में बाल गंगा धर तिलक तथा साहित्य में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र इनके आदर्श रहे हैं महागन मोहिनी तथा आल्हाखण्ड इनकी काव्य कृतियाँ है।

पं0 वलदेव प्रसाद मिश्र एक कुशल सम्पादक भी थे। इन्होंने साहित्य–सरो सत्य सिन्धु, भारतवासी, भारत–भानु तथा सोलजर आदि कई पत्रिकाओं का सम्पादन भी किया। इसके अतिरिक्त मास्टर स्वरूप कोठीवाल, मुंशी इन्द्रमणी,बृज रतन भट्ट, कन्हैया लाल वैदा, पं0 कृष्णानन्द, पं0 रामस्वरूप शुक्ल, पं0 ज्वाला प्रसाद मिश्र के सबसे छोटे भाई कन्हैया लाल मिश्र तथा पं0 कृष्ण नन्द लीला धर जोशी आदि कई प्रमुख हिन्दी लेखक हुए।

हिन्दी सेवी के रूप में यहाँ के रचनात्मक साहित्य को गति दी इस प्रतिभा का नाम है पं0 ज्वाला दत्त शर्मा। बीसवीं शती के आधे काल खण्ड में जनपद के कई साहित्यकारों ने मात्रात्मक रूप में जितना लिखा उसका आधा लिखा पं0 दुर्गा दत्त त्रिपाठी ने। महाद्वोत्तर साहित्य में गद्यकार तथा सम्पादक के रूप में सक्रिय जगदीश एम0ए0 रहे। 1937 में इन्होंने मुरादाबाद से प्रदीप मासिक का सम्पादन तथा प्रकाशन किया। प्रो0 अमर नाथ झा, रामेश्वर गुरू केदारनाथ अग्रवाल अज्ञेय, लक्ष्मण त्रिपाठी, रामनारायण चौधरी, एम0वी0 पुणताम्बेकर कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' किशोलाल मश्रुवाला,यनारायण व्यास आदि प्रदीप के रचनाकारों में से थे। कवि व्यंग्य लेखक, ज्योतिष स्व0 अम्बालाल नागर 'ज्योतिष परिचय' ज्योतिष विज्ञान तथा भौतिकी और दर्शन इनकी चर्चित कृतियां हैं। छायावादोत्तर गीत धारा के अलबेले गीत के कवि मदन मोहन व्यास के जीवन काल में केवल दो काव्य–संग्रह क्रमशः भाव तेरे शब्द मेरे' और 'हमारा घर' प्रकाशित हो पाए।

साथ में स्व0 दिनेश चन्द्र पाण्डेय, स्0 दयानन्द गुप्त स्व0 पृथ्वीराज मिश्र, बहुआयामी व्यक्तित्व और प्रतिभा के धनी स्व0 सर्वेश्वर शरण सर्वे, ब्रजभाषा के चर्चित कवि, रचनाकार चित्रकार पं0 जगदीश गुप्त, राजनारायण, मेहरोत्रा, कैलाश चन्द्र अग्रवाल राजेन्द्र प्रसाद डॉ0 खुशदिल, पुरानी पीढ़ी के रचनाकारों में श्री दयावृत शर्मा आदि प्रमुख हैं। बाल साहित्य में विख्यात मनोहर लाल वर्मा का नाम उल्लेखनीय है।

निष्कर्ष

सारतः वर्तमान में मुरादाबाद पीतल नगरी के नाम से विश्व के मान चित्र पर अपना स्वर्णिम भौगोलिक सीमाओं को प्रदर्शित करने वाला यह जनपद रामगंगा के किनारे स्थित है। कृषि एवं खनिज सम्पदा से सम्पन्न जनपद पहले पांचाल राज्य का अंग था तथा पुराण काल में मध्य देश के नाम से जाना जाता था। मध्यकाल मेंइसे चौपाला के नाम से भी अभिहित किया गया 'किंवदन्ती है कि सम्भल के रूस्तम खां ने दिल्ली के शहंशाह के बेटे मुराद के नाम पर इसका नाम करण मुरादाबाद किया।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *जनपदीय विकास पुस्तिका मुरादाबाद–2004–05,सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग मुरादाबाद द्वारा प्रकाशित,पृ0– 9*
2. *जनपदीय विकास पुस्तिका मुरादाबाद–2004–05, सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग मुरादाबाद द्वारा प्रकाशित,पृ0 10.*
3. *डॉ0 उषा चौधरी मुरादाबाद जिले के स्थान–नामों का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन, पृ0 19.*
4. *संस्कार दीपक–मुरादाबाद नगर विशेषांक संस्कार भारती मुरादाबाद द्वारा प्रकाशित, पृ0 12.*
5. *मुरादाबाद गजेटियर– 1909.*
6. *गिरिजा नन्दन रूहेलखण्ड–इतिहासएवं संस्कृतिपृ0 134.*
7. *गिरिजानन्दन रूहेलखण्ड–इतिहास एवं संस्कृतिपृ0 134.*
8. *संस्कार दीपिका– मुरादाबाद विशेषांक, संस्कार भारती द्वारा प्रकाशित, पृष्ठ 12–13.*
9. *संस्कार दीपिका– मुरादाबाद विशेषांक, संस्कार भारती द्वारा प्रकाशित, पृष्ठ 26–28.*
10. *संस्कार दीपिका– मुरादाबाद विशेषांक, संस्कार भारती द्वारा प्रकाशित, पृष्ठ 59–60.*
11. *संस्कार दीपिका– मुरादाबाद विशेषांक, संस्कार भारती द्वारा प्रकाशित, पृष्ठ 83–84.*